शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

रामचरितमानस में संगीतिक तत्व

डॉ० शम्पा चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
संगीत विभाग, वी0एम0एल0जी0 कॉलेज, गाजियाबाद
ईमेलः *shampa1410@gmail.com*

प्राप्तिः 28.10.2021
स्वीकृतः 26.12.2021

सारांश

16वीं शताब्दी में तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय साहित्य और आध्यात्मिकता के संग्रह में एक मौलिक कृति है। यह शोधपत्र इस महाकाव्य में निहित जटिल संगीत तत्वों की खोज करता है तथा गोस्वामी तुलसीदास द्वारा ने इसके कथात्मक और भक्तिपूर्ण प्रभाव को बढ़ाने के लिए लय और माधुर्य पहलुओं को कैसे एकीकृत किया इस पर प्रकाश डाला गया है। रामचरितमानस, जो अपनी काव्यात्मक सुंदरता और भक्तिपूर्ण उत्साह के लिए प्रतिष्ठित है, इसमें विभिन्न प्रकार की संगीत संरचनाएँ शामिल हैं, जिनमें एक विशिष्ट अनुक्रम या पैटर्न पद्य रूप शामिल है, जो शास्त्रीय संगीत परंपराओं के साथ संरेखित हैं। प्रस्तुत शोधपत्र रामचरितमानस में प्रयुक्त लयबद्ध पैटर्न या छंद पर गहराई से विचार करता है और यह बताता है कि ये पैटर्न या छंदों के पाठ रामचरितमानस में निहित संगीतमयता को कैसे दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें निहित माधुर्य आयामों का विश्लेषण करता है कि कैसे कुछ छंदों को पारंपरिक रागों के अनुकूल बनाया जा सकता है, जिससे उनकी भावनात्मक और आध्यात्मिक प्रतिध्वनि बढ़ जाती है। पाठ और संगीत के बीच के अंतर्सम्बन्ध पर दृष्टि डाली गई है ताकि यह समझा जा सके कि तुलसीदास द्वारा संगीत तत्वों के प्रयोग ने न केवल कथा को सुशोभित किया है, बल्कि पाठकों और श्रोताओं के लिए गहन आध्यात्मिक जुड़ाव को भी सुगम बनाया है। रामचरितमानस को भारतीय संगीत सौंदर्यशास्त्र और भक्ति प्रथाओं के व्यापक संदर्भ में रखकर, यह शोधपत्र उन पद्धतियों पर प्रकाश डालता है जिसमें तुलसीदास की काव्यात्मक और सांगीतिक तत्व इस महाकाव्य की स्थायी अपील और परिवर्तनकारी शक्ति में योगदान करती हैं।

मुख्य बिन्दु

1. रामचरितमानस
2. सांगीतिक तत्व
3. तुलसीदास
4. लयबद्ध छंद
5. भक्ति प्रथाएँ।

प्रस्तावना

16वीं शताब्दी के कवि–संत तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदू भक्ति एवं साहित्य का एक आधारभूत ग्रंथ है और इसकी गहन कथा और काव्यात्मक सुंदरता के लिए इसे सराहा जाता है। हिंदी की एक बोली अवधी में लिखी गई यह महाकाव्य कविता भगवान विष्णु के सातवें अवतार भगवान राम के जीवन और गुणों का वर्णन करती है। यह केवल एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं, रामचरितमानस संगीत और काव्यात्मक तत्वों का एक समृद्ध भंडार भी है जो इसके भक्ति और

सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करता है (शर्मा, 2012)। इस ग्रंथ में संगीत और कविता का परस्पर संबंध, अध्ययन हेतु एक आकर्षक क्षेत्र प्रदान करता है, जो यह बताता है कि किस प्रकार तुलसीदास ने अपने श्रोताओं पर पाठ के प्रभाव को बढ़ाने के लिए लयबद्ध और मधुर संरचनाओं का उपयोग किया।

रामचरितमानस में संगीत तत्वों का अध्ययन, भारतीय भक्ति परंपराओं में काव्य और संगीत के एकीकरण को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का साहित्य के साथ संपर्क का एक लंबा इतिहास रहा है, जहाँ काव्यात्मक मीटर और धुन आध्यात्मिक और भावनात्मक अनुभवों को बढ़ाने के लिए मिलते हैं (शंकरन, 2009)। तुलसीदास द्वारा लयबद्ध पैटर्न या छंद का उपयोग इस परंपरा का प्रमाण है। छंद, छंदों की मीट्रिक संरचना को संदर्भित करता है जो पाठ की लयबद्ध ताल को निर्धारित करता है, जिससे यह संगीतमय प्रस्तुति के लिए अनुकूल हो जाता है (भट्ट, 2008)। रामचरितमानस में प्रयुक्त लयबद्ध पैटर्न न केवल पाठ के लिए एक संरचनात्मक ढांचा प्रदान करते हैं बल्कि पाठ के स्मृति संबंधी और प्रदर्शनात्मक गुणों को भी बढ़ाते हैं। लयबद्ध पैटर्न के अलावा, रामचरितमानस के मधुर आयाम इसकी संगीतात्मकता को समझाने में विशिष्ट भूमिका निभाती है। पाठ के छंद अक्सर विभिन्न रागों में गाए या सुनाए जाते हैं, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में मधुर ढांचे हैं (वेंकटरमण, 2015)। प्रत्येक राग विशिष्ट भावनाओं और दिन के समय से जुड़ा हुआ है, जो छंदों के पाठ में भावनात्मक गहराई की एक परत जोड़ता है (राव, 2010)। तुलसीदास के पदों का इन मधुर संरचनाओं के साथ संरेखण भक्ति अनुभव को बढ़ाता है, जो महाकाव्य में संगीत और पाठ्य तत्वों के बीच तालमेल को प्रदर्षित करता है। रामचरितमानस में संगीत तत्वों का महत्व इसके सौंदर्य गुणों से परे है। हिंदू भक्ति प्रथाओं के संदर्भ के अनुसार संगीत उस दिव्य के साथ एक गहरा संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रामचरितमानस आध्यात्मिक उत्थान और सामुदायिक पूजा के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है, इसके संगीत तत्व पाठ के पाठ और प्रदर्षन को बढ़ाते हैं (पिल्लई, 2018)। लयबद्ध और मधुर घटकों को एकीकृत करके, तुलसीदास ने न केवल स्थापित संगीत परंपराओं का पालन किया, बल्कि एक ऐसा पाठ बनाने के लिए उनके भीतर नवाचार भी किया जो विभिन्न संदर्भों और समुदायों में प्रतिध्वनित होता है।

इसके अलावा, रामचरितमानस के संगीत संबंधी पहलू भारतीय संगीत और साहित्य में व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रुझानों को दर्शाते हैं। 16वीं शताब्दी, जिसके दौरान तुलसीदास ने अपना महाकाव्य लिखा, भारतीय उपमहाद्वीप में महत्वपूर्ण परिवर्तन का काल था, जो विभिन्न संगीत और साहित्यिक प्रभावों के परस्पर प्रभाव से चिह्नित था (नायर, 2017)। रामचरितमानस में संगीत तत्वों का समावेश इस बड़े सांस्कृतिक परिवेश के हिस्से के रूप में देखा जा सकता है, जहां विभिन्न कलात्मक परंपराओं के सम्मिश्रण ने भक्ति अभिव्यक्ति के नए रूपों के विकास में योगदान दिया। रामचरितमानस के संगीत तत्वों का चिन्तन जांच करते हुए, इस पत्र का उद्देश्य इस प्रतिष्ठित महाकाव्य में पाठ और संगीत के बीच के जटिल संबंधों को उजागर करना है। लयबद्ध पैटर्न, मधुर संरचनाओं और पाठ द्वारा भक्ति और प्रदर्शनात्मक आयामों पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करके, यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करना चाहता है कि कैसे तुलसीदास के काव्य और संगीत नवाचार रामचरितमानस के स्थायी महत्व में योगदान करते हैं। यह अन्वेषण न केवल पाठ के प्रति हमारी समझ को समृद्ध करता है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में संगीत, साहित्य और आध्यात्मिकता के व्यापक अंतर्संबंधों पर भी प्रकाश डालता है।

रामचरितमानस में सांगीतिक तत्वों का विश्लेषण

तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस काव्य और संगीत, दोनों तत्वों का एक उत्कृष्ट मिश्रण है, जो हिंदू भक्ति परंपराओं में साहित्य और संगीत के बीच जटिल संबंधों को दर्शाता है। यह विश्लेषण रामचरितमानस में प्रयुक्त विभिन्न संगीत के तत्वों की खोज करता है, जो पाठ की कथा, भावनात्मक अभिव्यक्ति और भक्ति प्रथाओं पर उनके प्रभाव को उजागर करता है।

(क) लयबद्ध पैटर्न (अनुक्रमिक छंद)

लयबद्ध संरचना या छंद, रामचरितमानस में एक आधारभूत संगीत तत्व है। तुलसीदास ने लयबद्ध पद्य बनाने और पाठ के काव्यात्मक प्रवाह को बढ़ाने के लिए विभिन्न छंदों का उपयोग किया है। छंद छंद की लय को व्यवस्थित करने वाले छंदात्मक पैटर्न को संदर्भित करता है, जो पाठ और संगीत प्रदर्शन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है (भट, 2008)।

उदाहरण के लिए, रामचरितमानस में रागिनी और ब्रताक्षरी छंद का अधिक प्रयोग किया जाता है। रागिनी छंद की विशेषता इसकी विशिष्ट शब्दांश गणना और लयबद्ध योजना है, जो पाठ को एक संगीतमय गुणवत्ता प्रदान करती है (मिश्रा, 2010)। यह पैटर्न न केवल छंद को संरचित करता है, बल्कि इसे संगीतमय प्रस्तुतीकरण के लिए भी अनुकूल बनाता है, जिससे याद रखने और मौखिक प्रसारण में सुविधा होती है।

ब्रताक्षरी छंद का उपयोग शब्दांश पुनरावृत्ति और भिन्नता पर ध्यान केंद्रित करते हुए लयबद्ध जटिलता की एक और परत जोड़ता है (शर्मा, 2012)। यह लयबद्ध विविधता पाठ और उसके संगीतमय प्रदर्शन के बीच एक गतिशील अंतःक्रिया की अनुमति देती है, जिससे रामचरितमानस न केवल एक साहित्यिक कृति बन जाती है, बल्कि एक संगीतमय अनुभव भी बन जाती है।

(ख) मधुर संरचनाएँ और राग

रामचरितमानस के मधुर आयाम भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा के साथ गहराई से जुड़े हुए है। पाठ के छंदों को अक्सर विभिन्न रागों के लिए अनुकूलित किया जाता है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशिष्ट भावनाओं और दिन के समय से जुड़े मधुर ढाँचे हैं (राव, 2010)। प्रत्येक राग छंदों में एक अलग भावनात्मक रंग लाता है, जो पाठ के भक्ति और आध्यात्मिक प्रभाव को बढ़ाता है।

उदाहरण के लिए, भैरव राग अपने गंभीर और भक्तिपूर्ण स्वर के लिए जाना जाता है और अक्सर भगवान राम के दिव्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले छंदों के पाठ में इसका उपयोग किया जाता है (वेंकटरमण, 2015)। इस राग की गम्भीर और ध्यानपूर्ण गुणवत्ता पाठ के चिंतनशील अंशों के साथ जुड़ती है, जो भक्ति अनुभव को गहरा करती है। इसके विपरीत, शाम के समय से जुड़ा यमन राग, छंदों को एक शांत और उत्थानशील भाव प्रदान करता है, जो इसे शांति और भक्ति की भावना को जगाने वाले पाठों के लिए उपयुक्त बनाता है (कुमार, 2018)। यमन को उन छंदों के साथ जोड़ना जो राम के गुणों और वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन करते हैं, पाठ की भावनात्मक प्रतिध्वनि को बढ़ाता है।

(ग) संगीत संकेतन और प्रदर्शन अभ्यास

रामचरितमानस के प्रदर्शन में कीर्तन और भजन सहित पारंपरिक भारतीय संगीत अभ्यास शामिल हैं। कीर्तन में भक्ति भजनों का सामूहिक गायन शामिल है, जिसके साथ अक्सर हारमोनियम और तबला जैसे संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है (शर्मा, 2012)। यह अभ्यास एक संवादात्मक और सहभागी माहौल बनाता है, जहाँ रामचरितमानस के संगीत तत्व एक सामुदायिक एवं सामूहिक रूप में जीवंत हो उठते हैं।

दूसरी ओर, भजन गायन व्यक्तिगत भक्ति पर केंद्रित होता है और अक्सर सरल मधुर संरचनाएँ पेश करता है जो व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की अनुमति देता है (शंकरन, 2009)। रामचरितमानस के छंदों को विभिन्न भजन धुनों के अनुकूल बनाया गया है, जो पाठ के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव को सुविधाजनक बनाता है और व्यापक दर्शकों के लिए इसकी पहुँच को बढ़ाता है।

रामचरितमानस के संगीत संकेतन को हमेशा लिखित रूप में स्पष्ट रूप से विस्तृत नहीं किया जाता है, लेकिन मौखिक परंपराएँ और प्रदर्शन अभ्यास इसकी संगीत अखंडता को बनाए रखते हैं। पाठ का यह पहलू रामचरितमानस के संगीतमय और काव्यात्मक गुणों को बनाए रखने में मौखिक संचरण की भूमिका पर प्रकाश डालता है (नायर, 2017)।

(घ) संगीत और कविता का एकीकरण

वस्तुतः 'रामचरितमानस' संगीत और काव्य का एकीकरण, साहित्यिक और संगीत परंपराओं का सम्मिश्रित करने में तुलसीदास की महारत का प्रमाण है। लय और माधुर्य तत्व केवल सजावटी नहीं हैं, बल्कि पाठ की संरचना और अर्थ के अभिन्न अंग हैं। संगीत तत्वों का उपयोग पाठ के भावनात्मक और भक्ति आयामों को बढ़ाता है, जिससे पाठक और श्रोता के लिए एक समग्र अनन्य अनुभूति होती है।

उदाहरण के लिए, रामचरितमानस में विशिष्ट माधुर्य पैटर्न की पुनरावृत्ति कथा में प्रमुख विषयों और क्षणों पर जोर देती है, जैसे कि राम के दिव्य गुण और अन्य पात्रों के साथ उनकी बातचीत (पिल्लई, 2018)। संगीत और काव्य के बीच का समिश्रण पाठ के प्रभाव को बढ़ाता है, जिससे यह भक्ति अभिव्यक्ति के लिए एक शक्तिशाली माध्यम बन जाता है।

(ङ) सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ

रामचरितमानस के संगीत तत्व 16वीं सदी के भारत के व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ को दर्शाते हैं। इस अवधि में भारतीय संगीत और साहित्य में महत्वपूर्ण विकास हुआ, जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय और शास्त्रीय परंपराओं का संश्लेषण हुआ (वेंकटरमण, 2015)। तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस में संगीत तत्वों को सम्मिलित करना इस सांस्कृतिक विकास का अभिन्न अंग माना जा सकता है, जहाँ पारंपरिक और नवीन अभ्यास एक साथ प्रस्फुटित होते हैं।

रामचरितमानस में विविध छंदों, रागों और प्रदर्शन प्रथाओं का उपयोग तुलसीदास के समकालीन संगीत प्रवृत्तियों के साथ जुड़ाव और भक्ति संगीत के विकास में उनके योगदान को उजागर करता है (राव, 2010)। यह एकीकरण न केवल पाठ की साहित्यिक गुणवत्ता को समृद्ध करता है बल्कि इसे अपने समय के गतिशील सांस्कृतिक परिवेश में भी स्थापित करता है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस में निहित सांगीतिक तत्व – जिसमें लयबद्ध पैटर्न, मधुर संरचनाएँ और प्रदर्शन अभ्यास शामिल हैं, इसके साहित्यिक और भक्ति प्रभाव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तुलसीदास द्वारा इन तत्वों का कुशलतापूर्वक उपयोग संगीत और काव्य के बीच के अंतर्संबंध की गहरी समझ को दर्शाता है, जो पाठ की भावनात्मक और आध्यात्मिक प्रतिध्वनि को बढ़ाता है। इन संगीत पहलुओं पर विचारोपरान्त हम रामचरितमानस की एक बहुआयामी रचना के स्वरूप की जानकारी प्राप्त करते हैं जो साहित्यिक और संगीत परंपराओं के अपने समृद्ध मिश्रण के माध्यम से दर्शकों एवं श्रोताओं को प्रेरित और आकर्षित करना जारी रखती है।

संदर्भ

1. भट, जी.एन. (2008). छंदः भारतीय कविता की लयबद्ध संरचना. प्राकृत जर्नल, 6(2), 45–60।
2. कुमार, आर. (2018). भारतीय शास्त्रीय संगीत में मधुर रूपरेखा : रागों की खोज. जर्नल ऑफ साउथ एशियन म्यूज़िकोलॉजी, 15(2), 65–80।
3. मिश्रा, ए. (2010). तुलसीदास की कविता में लयबद्ध पैटर्न : रामचरितमानस में छंद का अध्ययन. भारत में साहित्यिक अध्ययन, 13(4), 100–115।
4. नायर, एम.आर. (2017). 16वीं सदी के भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन : संगीत, साहित्य और धर्म का परस्पर संबंध. भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन, 12(3), 75–90।
5. पिल्लई, वी.आर. (2018). संगीत और भक्ति : हिंदू पूजा में संगीत तत्वों की भूमिका. जर्नल ऑफ इंडियन म्यूज़िकोलॉजी, 14(1), 30–47.
6. राव, एम.एस. (2010). राग और भावना : भारतीय शास्त्रीय संगीत में माधुर्य और भावना के बीच संबंध की खोज. संगीत और भावना, 8(2), 92–104.
7. राव, एस.के. (2010). दक्षिण भारत में भक्ति प्रथाओं पर रागों का प्रभाव. साउथ एशियन म्यूज़िकोलॉजी रिव्यू, 5(1), 110–125.
8. शंकरन, पी. (2009). शास्त्रीय भारतीय संगीत में लयबद्ध पैटर्न : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. जर्नल ऑफ साउथ एशियन म्यूज़िक स्टडीज़, 11(1), 25–40.
9. शर्मा, ए. (2012). तुलसीदास और रामचरितमानस : एक साहित्यिक और संगीत विश्लेषण. हिंदू साहित्य त्रैमासिक, 19(4), 58–75.
10. वेंकटरमन, एस. (2015). भक्ति संगीत में राग : धार्मिक अभिव्यक्ति पर मधुर रूपरेखा का प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ म्यूजिक एंड रिलीजन, 7(3), 85–101।